शुल्क १५ वर्ष
२१००/- रुपये

foKfIr

एक प्रति ८/- रुपये
वार्षिक २५०/- रुपये

rjkiFk dh dUnh; xfrfofèk;k dk lokfèkd ykdfi; lkIrkfgd e[ki=k

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष १८ : अंक १६ : नई दिल्ली : २२-२८ जुलाई २०१२

परम पावन आचार्यश्री महाश्रमण आदि श्रमण ५१ तथा महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी आदि श्रमणी ९२ जसोल में सानंद चातुर्मासिक प्रवास कर रहे हैं। आचार्यवर के पवित्र आभामंडल में पूरे गांव में धर्ममय वातावरण बना हुआ है। तपस्याओं का क्रम निरंतर जारी है। दर्शनार्थियों और सेवार्थियों का तांता लगा रहता है। उपासक प्रशिक्षण शिविर परिसंपन्न हो गया है। २१,२२ जुलाई को राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सरसंघचालक श्री मोहन भागवत का आगमन तथा पूज्यवर की सन्निधि में सहआयोजन पूर्व निर्धारित है। २८-३० जुलाई को जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के तत्त्वावधान में तेरापंथी सभा प्रतिनिधि सम्मेलन समायोज्य है।

le>k ikik dk&...

µvkpk; egkJe.k

आर्हत् वाङ्मय में कहा गया है

fpÙkerefpÙk ok vli ok tb ok cgA
nrlkg.keÙk fi vkXxgfl vtkb;kAA

संयमी मुनि सजीव या निर्जीव, अल्प या बहुत, दंतशोधन मात्र वस्तु का भी उसके अधिकारी की आज्ञा लिए बिना स्वयं ग्रहण नहीं करे, न दूसरों से ग्रहण कराए और ग्रहण करने वाले का अनुमोदन भी न करे।

जैन वाङ्मय में १८ पाप बताए गए हैं। उनमें तीसरा पाप है-अदत्तादान। इसका सीधा-सा अर्थ है चोरी। यह शब्द इस प्रकार बना है अदत्त और आदान। अदत्त का मतलब है नहीं दिया हुआ और आदान यानी ग्रहण करना। जो चीज उसके स्वामी द्वारा दी नहीं गई है, उसका आदान या ग्रहण करना यानी चोरी करना। चोरी करने वाला व्यक्ति उस वस्तु के मालिक के मन को आहत कर सकता है और वहां फिर हिंसा भी हो सकती है। आचार्य सोमप्रभसूरी ने कहा

ijtueu% ihMkØhMkou oèkHkkouk
Hkoueofu0;kfi0;kiYyrk?kue.MyeA
dxfrxeu ekx% Loxkioxijkxy]
fu;reuikn; Lr; u.kk fgrdkf{k.kke Ï

हित के आकांक्षी पुरुषों के लिए चोरी अनुपादेय है, अग्रहणीय है, अस्वीकार्य है, अनाचरणीय है। यह चोरी दूसरे मनुष्यों के मन को पीड़ा पहुंचाने वाली है। मारने की भावना का भवनरूप है, भूमण्डल में व्याप्त विपत्तिरूप बेलों के लिए मेघमण्डल के समान है, कुगति में जाने का मार्ग है, स्वर्ग और मोक्ष के द्वार के आगे अर्गला है।

कभी कोई व्यक्ति लोभाविष्ट होकर चोरी कर लेता है और कई बार अभाव के कारण भी आदमी चोरी की प्रवृत्ति में चला जाता है। चूंकि आदमी विवश होता है, उसे खाने को पूरा नहीं मिलता है, वह चोरी का रास्ता अपना सकता है। क्योंकि भूख एक बड़ी समस्या है। प्राकृत साहित्य में कहा गया

है-खुहा समा वेयणा णत्थि अर्थात् भूख के समान वेदना नहीं होती है। राजा का तो फर्ज होता है कि इस बात पर ध्यान दे कि उसकी प्रजा में कोई भूखा न रहे, भूखा न सोए।

लड़का उदास बैठा था।

आगन्तुक व्यक्ति - क्या बात हुई?

लड़का - बाबूजी! आज मेरा बारा नहीं है इसलिए उदास हूं।

आगन्तुक व्यक्ति - बारा क्या होता है?

लड़का - हम दो भाई हैं। हम दोनों को रोज नाश्ता नहीं मिलता। एक दिन मुझे नाश्ता मिलता है और दूसरे दिन मेरे भाई को नाश्ता मिलता है। आज मेरे भाई का नम्बर है, मेरी बारी नहीं है। मुझे नाश्ता नहीं मिला, भूखा हूं, इसलिए उदास बैठा हूं। ऐसे लोग, जिनको खाने को नहीं मिलता है और कोई रोजगार, धंधा नहीं मिला हुआ है, वे व्यक्ति फिर चोरी जैसे कर्म को स्वीकार कर सकते हैं। परम पूज्य गुरुदेव महाप्रज्ञजी फरमाया करते थे कि भूख भी हिंसा का एक कारण है।

परम पूज्य गुरुदेव महप्रज्ञजी अहिंसा यात्रा कर रहे थे। मैं साथ में था। हम मार्ग में चल रहे थे। एक बिल्डिंग आई। किसी ने मुझे अन्दर जाने के लिए कहा। मैं उस बिल्डिंग में गया। वहां छोटे-छोटे बच्चे थे। मुझे बताया गया कि ये अनाथ बच्चे हैं। इनको यहां भर्ती किया गया है। यहां लाकर इनको आतंकवादी बनने से बचा लिया गया है। अगर इनको कोई आश्रय न मिलता तो ये अपराध में, आंतकवाद में भी जा सकते थे। एक उक्ति मैंने सुनी है--'अभाव में स्वभाव बिगड़ता है।' आदमी गलत काम में चला जाता है। अभाव में चोरी करना भी कोई उत्तम काम तो नहीं, पर जो अभावग्रस्त नहीं हैं, वे चोरी में जाएं, यह तो बहुत ज्यादा निंदनीय, गर्हणीय बात हो जाती है। 'पर धन घूलि समान' अर्थात् पराई वस्तु को धूल के समान मानना चाहिए। श्रीमद्भगवद्गीता में कहा गया है -

dke ,"k Øks/k ,"k jtksx.kleqn~HkoA
egk'kuks egkikIek fo);sufeg oSfj.keAA

रजोगुण से उत्पन्न होने वाली काम और क्रोध दो वृत्तियां हैं, जो आदमी को अपराध की और ढकेल देती हैं। इन वृत्तियों पर कंट्रोल हो जाए और अभाव जैसी समस्या न रहे तो आदमी चौर्य कर्म से अपने आपको बचा सकता है। साधु जगह-जगह जाते हैं और लोगों को सन्मार्ग पर लाने का प्रयास करते हैं। कितनों को उपदेश मिलता है, प्रेरणा मिलती है और कुछ लोग संयम को स्वीकार भी करते हैं। परम पूज्य गुरुदेव तुलसी ने अणुव्रत का शंखनाद किया। अणुव्रत की बात तो कहीं भी कही जा सकती है। गृहस्थ पूर्णतया विरत न हो सके, किन्तु कुछ अंशों में भी विरत हो जाए तो उसमें त्याग की चेतना पुष्ट होती है।

बच्चों को ऐसे संस्कार दिए जाएं कि वे चोरी जैसा कोई कृत्य न करें, ईमानदारी के रास्ते पर चलें। आदमी के मन में ऐसा संकल्प जागे कि पराई वस्तु मुझे लेनी ही नहीं है। आज भी कुछ लोग ऐसे मिलेंगे, जिनमें बड़ी ईमानदारी है। वे दूसरों की वस्तु को लेना नहीं चाहते। कहीं कोई वस्तु मिल भी जाए तो बता देते हैं, सूचना कर देते हैं। करोड़ो रुपये जहां से लिए जा सकते हैं, वहां से भी न लेना आदमी की पवित्रता का परिचायक होता है। साधु-साध्वियों के उपदेश से भीतर में प्रेरणा जागती है कि मैं ऐसा काम नहीं करूंगा, जिस काम से मेरी आत्मा मलिन बने और वह अधोगति में जाए। चोरी करना तो एक प्रकार की हिंसा है। व्यक्ति एक जन्म में चोरी करता है तो पता नहीं अगले जन्म में वे कर्म उसको किस रूप में भोगने पड़ जाएं? कितनी तकलीफ उसके जीवन में आ जाए? इसलिए थोड़ा कष्ट पाना स्वीकार कर लेना चाहिए, परन्तु आदमी को चोरी जैसा काम नहीं करना चाहिए।

चोरी सजीव वस्तु की भी हो सकती है और निर्जीव वस्तु की भी हो सकती है। चोरी छोटी वस्तु

की भी हो सकती है और बड़ी वस्तु की भी हो सकती है। चोरी थोड़ी भी हो सकती है और ज्यादा भी हो सकती है। साधु का तो नियम है पूर्ण प्रामाणिकता का पालन करना। साधु को तो किसी के मकान में बैठना भी हो तो पहले मकान वालों की आज्ञा लेनी होती है कि मैं यहां बैठ जाऊं क्या? किसी के घर में प्रवास करना हो तो पहले पूछना होता है कि आपकी आज्ञा हो तो हम इस मकान में रह जाएं यानी पूरी प्रामाणिकता की साधना करना साधु का धर्म होता है।

जहां चोरी जैसे अपराध चलते हैं, वे ऐसे ठीक न हों तो शासक का फर्ज है कि व्यवस्था के द्वारा, कड़ाई के द्वारा, दण्ड संहिता के द्वारा भी चोरी जैसे अपराधों पर कंट्रोल करने का प्रयास करे। दुर्जनों के द्वारा सज्जन दुःखित हो जाएं, यह शासक के लिए चिन्तनीय बात होती है। सज्जनों की सुरक्षा करना राजा या शासक का फर्ज है। दुर्जन किसी को दुःख देते रहें, किसी की चोरियां करते रहें, डाका डालते रहें और शासक मौन बैठा रहे, कोई प्रतिकार न करे तो मेरा सोचना है कि उस शासक को गद्दी छोड़ देनी चाहिए। जो प्रतिकार करने की क्षमता न रखे, कुछ कह न सके, कुछ व्यवस्था न दे सके तो अच्छा है कि वह गद्दी से नीचे उतर जाए। गद्दी पर रहे तो अपनी प्रजा की रक्षा करना उसका कर्तव्य है। संस्कृत साहित्य में राजा या शासक के लिए कहा गया है-'सदवनमसदनुशासनमाश्रितभरणम्' अर्थात् राजा का कर्तव्य है कि सज्जनों की रक्षा करे। असज्जन लोगों पर अनुशासन करे और अपने आश्रित कोई भी भूखा न रहे। राजा विलास करने के लिए, सुख भोगने के लिए नहीं होता है। वास्तव में राजा जनता की सेवा करने के लिए होता है। जनता अरक्षित या अत्राण नहीं रहनी चाहिए। जनता सुख में है, शांति में है और विकास कर रही है तो वह राजा की सफलता है। जहां चोरी जैसा अपराध चलता है। वहां जनता के लिए अत्राणता की स्थिति बन सकती है तथा दण्ड न हो तो अपराध को रोकना और मुश्किल हो सकता है। उपदेश देने से सारे बदल जाएंगे, इसमें मेरा विश्वास कम है। उपदेश अच्छा है, कुछ प्रतिशत काम हो सकता है, पर सौ प्रतिशत लोग उपदेश को मान लेंगे, यह संभव नहीं है। उपदेश के साथ व्यवस्था तंत्र भी ठीक होना चाहिए।

एक न्यायाधीश के पास अपराधी आया।

न्यायाधीश ने कहा- तुम तो वही हो ना, जब मैं सामान्य वकील था, तब तुमने मुर्गी की चोरी की थी?

अपराधी - हां, साहिब! मैं वही हूं।

न्यायाधीश - जब मैं हाईकोर्ट में वकील था, तब तुमने बकरी की चोरी की थी?

अपराधी - हां, मैं वही हूं।

न्यायाधीश - अब मैं जज बन गया तो मेरे पास तुम्हारे खिलाफ यह आरोप आया है कि तुमने भैंस की चोरी की है।

अपराधी - यह तो प्रकृति की कृपा है कि आपने भी तरक्की की है और मैंने भी तरक्की की है।

आदमी को अपराध में तरक्की नहीं करनी चाहिए। अपराध तो कम होना चाहिए, रुकना चाहिए। अदत्तादान जैसा पाप आत्मा को मलिन बनाने वाला होता है। इसलिए आदमी उससे बचने का प्रयास करे।

ije ikou vkpk;Jh egkJe.k tlky e

fopkj vkj vkpkj dk lr g lLdkj

ff tykbA परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर ने प्रातःकालीन कार्यक्रम के अंतर्गत अपने पावन प्रवचन में कहा--'मनुष्य का व्यवहार धर्म से प्रभावित होना चाहिए। धर्म से प्रभावित व्यवहार संस्कारयुक्त होता

है। व्यक्ति के जीवन में अच्छे संस्कारों का अवतरण हो। विचार और आचार ये दो तट हैं। इन दोनों को जोड़ने हेतु सेतु है-संस्कार। यदि विचार संस्कार बन जाता है तो वह आचार के रूप में परिणत हो सकता है। बालपीढ़ी में संस्कारों को भरने का विशेष रूप से प्रयास होना चाहिए, उसके सामने संभावित लम्बा भविष्य होता है, यदि बच्चों में संस्कार परिपुष्ट बन जाएं तो परिवार, समाज और राष्ट्र का भविष्य उज्ज्वल बन सकेगा।' अपने प्रवचन के पश्चात् आचार्यप्रवर ने सप्तमाचार्य डालगणी के जीवनवृत्त पर आधारित 'डालिम चरित्र' आख्यान का वाचन किया।

कार्यक्रम में मंत्री मुनिश्री ने अपने उद्बोधन में कहा--'व्यक्ति हर कार्य में अपने विवेक को आगे रखे। इस बात के लिए सतत जागरूक रहे कि मेरे द्वारा किए गए कार्य में हिंसा अधिक न हो। हर प्रवृत्ति में कर्म बंधन से बचने का प्रयास करे। जो कर्म बंधन से बचता है, वह विवेकशील व धार्मिक होता है।'

तेरापंथ कन्या मंडल जसोल ने चौबीसी के पद्मप्रभु स्तवन का संगान किया। आज से जीवन विज्ञान अकादमी जैन विश्व भारती द्वारा जीवन विज्ञान संस्कार निर्माण प्रतियोगिता २०१२ का शुभारंभ हुआ। इस संदर्भ में जीवन विज्ञान के सहप्रभारी मुनि नीरजकुमारजी ने गीत का संगान किया। जीवन विज्ञान प्रभारी शासनश्री मुनि किशनलालजी ने अपने उद्गार व्यक्त किए। प्रशिक्षक श्री हनुमान शर्मा ने प्रतियोगिता के संदर्भ में अवगति दी। प्रतियोगिता की सामग्री पूज्यप्रवर के करकमलों में अर्पित की गई।

तेरापंथ सभा जसोल के नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्री खूबचन्द भंसाली ने अपने विचार व्यक्त करते हुए नवगठित कार्यकारिणी की घोषणा की। निवर्तमान अध्यक्ष श्री बाबूलाल लूंकड़ ने शपथ ग्रहण कराई। श्री डूंगरचंद सालेचा ने अपने विचार व्यक्त किए। परमाराध्य आचार्यप्रवर ने कार्यकर्ताओं को खूब पवित्र कार्य करने की प्रेरणा प्रदान की।

आज मध्याह्न में विद्याभारती के राज्य संगठन मंत्री श्री शिवप्रकाशजी ने पूज्यप्रवर के दर्शन किए तथा विविध विषयों पर संबोध प्राप्त किया।

vkè;kfRed Lukku g ifrØe.k

f„ tykbA आज प्रातः पंचायतराज के अतिरिक्त निर्देशक श्री महेन्द्र पारीख पूज्य आचार्यप्रवर के दर्शनार्थ उपस्थित हुए। पूज्यवर ने उन्हें पावन पाथेय प्रदान किया।

प्रातःकालीन कार्यक्रम के दौरान परम पूज्य आचार्यवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'जैन साधना पद्धति में प्रतिक्रमण का विधान है। यह एक ऐसा उपक्रम है, जिसके द्वारा व्रत के छिद्रों को रोका जा सकता है, आश्रव को निरुद्ध किया जा सकता है और चारित्र को निर्मल बनाया जा सकता है। प्रतिक्रमण का शाब्दिक अर्थ है-लौटना। प्रमाद को त्यागकर स्वस्थान में उपस्थित होना प्रतिक्रमण है। साधक प्रमादवश चारित्र से भटक जाता है तो प्रतिक्रमण और प्रायश्चित्त के द्वारा उस प्रमाद की शुद्धि की जा सकती है।

आचार्यवर ने आगे कहा--'प्रत्येक अवसर्पिणी और उत्सर्पिणी में चौबीस-चौबीस तीर्थंकर होते हैं। हम इस अवसर्पिणी के चौबीसवें तीर्थंकर भगवान महावीर की परम्परा के साधु-साध्वियां हैं। हमारे लिए प्रातः और सायं दोनों समय प्रतिक्रमण करने का विधान है। प्रतिक्रमण का अनुष्ठान आध्यात्मिक स्नान है। श्रावक समाज भी प्रतिक्रमण कंठस्थ करने का प्रयास करे। यह एक स्वाध्याय है। प्रतिक्रमण करने में तल्लीनता और एकाग्रता रहनी चाहिए। प्रतिक्रमण में अर्थ बोध भी होता रहे तो अधिक लाभदायी हो सकता है। इससे हमारे अध्यवसाय निर्मल बनते हैं। पक्खी के दिन तेरापंथ भवनों में सामूहिक रूप से प्रतिक्रमण हो तो एक अच्छा उपक्रम बन जाता है।' प्रवचन के पश्चात् पूज्यप्रवर ने 'डालिम चरित्र' आख्यान शृंखला की अग्रिम कड़ी प्रस्तुत की।

कार्यक्रम में मंत्री मुनिश्री ने अपने वक्तव्य में कहा--'हर व्यक्ति की कामना होती कि वह जहां

है, उससे आगे विकास करे। विकास सबको प्रिय है। धर्म के क्षेत्र में आने वाला व्यक्ति ज्ञान, दर्शन, चारित्र व तप के क्षेत्र में विकास चाहता है। इस चतुष्टयी में व्यक्ति तभी आगे बढ़ सकता है, जब भीतर में धर्म के प्रति जागरूकता होती है। यदि व्यक्ति के जीवन में धर्म नहीं उतरा, पदार्थ की आसक्ति नहीं छूटी तो परम की अनुभूति नहीं हो सकती। धार्मिक व्यक्ति का काम है कि वह परम के साक्षात्कार में आ रहे आवरण को दूर करने का प्रयास करे। पदार्थ का उपभोग करते हुए भी व्यक्ति अनासक्त रहने का प्रयास करे। अनासक्त जीवन जीने वाला व्यक्ति ही परम लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है।

तेरापंथ कन्या मंडल, जसोल द्वारा चौबीसी संगान के अंतर्गत सुपार्श्वप्रभु की स्तुति की गई। चेन्नई से समागत तेरापंथ महिला मंडल की ओर से मंत्री श्रीमती प्रेमलता सुराणा ने अपने विचार व्यक्त किए। महिला मंडल की बहनों ने गीत का संगान करते हुए संकल्पों का उपहार श्रीचरणों में समर्पित किया।

आज मध्याह्न में मध्यप्रदेश विधान सभा के आरोड़ क्षेत्र से विधायक श्री प्रवीणकुमारजी सकलेचा ने पूज्यवर के दर्शन किए और विविध विषयों पर मार्गदर्शन प्राप्त किया।

'kkluJh lkèoh fl)iKkth dh Lefr lHkk

f… tykbA परम श्रद्धेय आचार्यवर की मंगल सन्निधि में आज प्रातःकालीन कार्यक्रम के अंतर्गत १० जुलाई को लाडनूं में दिवंगत शासनश्री साध्वी सिद्धप्रज्ञाजी की स्मृति सभा समायोजित हुई। प्रारंभ में तेरापंथ कन्या मण्डल ने चौबीसी के चन्द्रप्रभु स्तवन का संगान किया। साध्वी विमलप्रज्ञाजी, साध्वी श्रुतयशाजी और साध्वी मुदितयशाजी ने साध्वी सिद्धप्रज्ञाजी की विशेषताओं को जनता के समक्ष प्रस्तुत किया। साध्वी यशोधराजी ने अपनी संसारपक्षीया भगिनी के प्रति अपने भावोद्‌गार व्यक्त किए। श्रीमती निर्मला बैद ने भावाभिव्यक्ति दी। शासनश्री साध्वी कमलश्रीजी आदि साध्वियों ने गीत का संगान किया।

मुख्य नियोजिकाजी ने अपने वक्तव्य में कहा--'शासनश्री साध्वी सिद्धप्रज्ञाजी की देह मानों ज्ञान के परमाणुओं से बनी हुई थी। वे सतत ज्ञान की परिक्रमा करती रहती और ज्ञान की परिधि में ही रहती। अपने नाम के अनुरूप उनकी प्रज्ञा सिद्ध थी। उनके पास ज्ञान था, श्रद्धा थी, संघ के प्रति निष्ठा थी। संघ निष्ठा और गुरुनिष्ठा के कारण ही वे सफलता का वरण करती थीं। जैन परिभाषिक शब्दकोश के कार्य में उनका जो सहयोग मिला, उसे विस्मृत नहीं किया जा सकता।'

मंत्री मुनिश्री ने अपने अभिभाषण में कहा--'आज हम श्रुतसाधिका साध्वी सिद्धप्रज्ञाजी की स्मृति तथा उनके गुणों के बारे में चर्चा कर रहे हैं। वे एक ऐसी साध्वी थीं, जो शारीरिक अस्वस्थता के बावजूद श्रुताराधना में निरन्तर लगी रहती थीं। उन्होंने धर्मसंघ को ज्ञान के क्षेत्र में अपनी बहुत सेवाएं दीं। उनके स्वर्गवास से संघ में एक प्रतिभा संपन्न साध्वी का स्थान रिक्त हो गया। उनकी आत्मा आध्यात्मिक उन्नति को प्राप्त होती रहे।'

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने अपने उद्‌बोधन में कहा--'साध्वी सिद्धप्रज्ञाजी प्रारंभ से ही एक विवेक संपन्न साध्वी के रूप में धर्मसंघ में प्रतिष्ठित रही। उनमें संघ और संघपति के प्रति प्रगाढ़ श्रद्धाभाव था। उनके जीवन में सहनशीलता थी। उनकी धृति विलक्षण थी। उन्होंने सबके साथ सामंजस्य स्थापित करने का उदाहरण प्रस्तुत किया। वस्तुतः वे श्रुतसाधिका थी। उन्होंने श्रुतराधना के द्वारा धर्मसंघ की सेवा की, अपनी प्रज्ञा का उपयोग अध्ययन-अध्यापन तथा आगम सम्पादन के कार्य में किया। पूज्य आचार्यवर ऐसा आशीर्वाद दिराएं की ऐसी विशिष्ट साध्वी के रिक्त स्थान की पूर्ति दूसरी साध्वियां कर सकें।'

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'आदमी गुणों के आधार पर साधु और अवगुणों के आधार पर असाधु बन जाता है। आदमी का लक्ष्य रहे कि वह दुर्गणों को छोड़कर गुणों को अपनाने का प्रयास करें। गुण ग्राहकता से आदमी का जीवन परिपूर्ण बन जाता है। साधक सोचे मेरे जीवन में साधना का विकास हो। ज्यों-ज्यों मेरा दीक्षा पर्याय बढ़ रहा है, त्यों-त्यों मेरी साधना परिपक्व

बने। संयम व महाव्रतों की साधना मूल बात है। साधु को यथाशक्ति और यथापेक्षा सेवा, स्वाध्याय व अनाहार की तपस्या भी करनी चाहिए। तीनों संभव न हो तो तीनों में से जो अधिक उपयुक्त हो, उसे स्वीकार करना चाहिए।

साध्वी सिद्धप्रज्ञाजी का उल्लेख करते हुए आचार्यप्रवर ने कहा वे दीक्षा पर्याय में लगभग मेरे समान थी। उनका नाम बड़ा अच्छा था-'सिद्धप्रज्ञा' जैसा उनका नाम था वैसी ही उनमें प्रतिभा थी। शारीरिक अस्वस्थता के कारण वे ज्यादा यात्रा नहीं कर सकी, इसलिए उन्हें लाडनूं में ही ज्यादा रहने का मौका मिला। उस दौरान उन्होंने आगम आदि का कार्य कर अवसर का पूरा लाभ उठाया। उनमें प्रतिभा थी। जैन पारिभाषिक शब्दकोश के कार्य में उनका भी योगदान रहा। हर व्यक्ति में ज्ञान का इतना क्षयोपशम नहीं होता। मानो वे कोई पूर्व जन्म का क्षयोपशम साथ लेकर आई थी। ज्ञानाराधना में निरत रहने वाली साध्वी थी। मेरा अनुमान है कि परम पूज्य गुरुदेव महाप्रज्ञजी के मन में भी सिद्धप्रज्ञाजी का स्थान था। वे उन्हें बहुत महत्त्व दिया करते थे। ऐसा प्रतीत हो रहा है कि उनमें कषाय मंदता की भी अच्छी साधना थी। व्यवहार की शालीनता व सेवा भावना से युक्त एक ऐसी साध्वी संघ में आई थी तथा कुछ जल्दी ही चली गई। हार्ट की मरीज होकर इतने दिन रह गई यह भी बड़ी बात है। मैंने उन्हें 'शासनश्री' साध्वी सिद्धप्रज्ञाजी के रूप में संबोधित किया। संबोधन-मिलना बड़ी बात नहीं है, गुणवत्ता व्यक्ति को आगे बढ़ाती है।

साध्वी सिद्धप्रज्ञाजी अनेक विशेषताओं से संपन्न साध्वी थी। आगम आदि सम्पादन के कार्य में वे अच्छे रूप में जुड़ी हुई थी। साध्वी यशोधराजी उनकी संसारपक्षीया बड़ी बहन हैं। प्रबुद्ध हैं, विदुषी हैं तथा शासनभक्ति वाली शालीन साध्वी हैं। इनमें आचार्यों के प्रति विनय, इंगित व समर्पण का भाव है। साध्वी यशोधराजी लम्बे समय तक शासन को सेवा देती रहें। इनके ही संसारपक्षीय परिवार की साध्वी चांदकुमारीजी (लाडनूं) धर्मसंघ की एक अच्छी साध्वी हैं।

साध्वी सिद्धप्रज्ञाजी में स्वाध्याय का गुण था। उन्हें परम पूज्य गुरुदेव तुलसी से दीक्षित होने का मौका मिला। तीन-तीन आचार्यों की पीढ़ी को देखा। एक ऐसी साध्वी जिन्होंने ज्ञान को अपने जीवन का ध्येय बना लिया। उनमें ज्ञान की स्फुरणा थी। अपनी स्फुरणा से उन्होंने जैन वाङ्मय के सम्पादन कार्य में सहयोग किया। ३७-३८ वर्षों तक साधना की, सेवा की। ऐसी साध्वी के प्रति हमारे मन में बहुत ही आह्लाद का भाव हैं।'

आचार्यप्रवर ने प्रसंगवश कहा--'परमपूज्य गुरुदेव तुलसी के शासनकाल में साध्वी सिद्धप्रज्ञाजी, साध्वी निर्वाणश्रीजी और साध्वी विमलप्रज्ञाजी त्रिमूर्ति के रूप में आगम कार्य में लगी हुई थी। अब भी एक त्रिमूर्ति इस कार्य में लगी हुई है-साध्वी श्रुतयशाजी, साध्वी मुदितयशाजी, साध्वी शुभ्रयशाजी। ये साध्वियां पहले परम पूज्य गुरुदेव महाप्रज्ञजी के चरणों में बैठकर कार्य किया करती थी और अब हमारे पास कार्य करती है। साध्वी जिनप्रभाजी भी आगम कार्य में लगी हुई है, राजप्रश्नीय के कार्य के लिए हमारे पास आती हैं। ये बड़ी विदुषी साध्वी हैं, तत्त्वज्ञा हैं। इनका वक्तृत्व भी अच्छा है। संस्कृत भाषा में भी इनका अच्छा विकास है। साध्वी विमलप्रज्ञाजी ने श्री भिक्षु आगम विषय कोश के कार्य में अपना श्रम नियोजित किया था। ये हमारी गोचरी की सेवा में निरत हैं, हमारी दो समय की गोचरी का दायित्व बखूबी निभाती हैं। गुरुदेव महाप्रज्ञजी के समय से ये इस कार्य में लगी हुई हैं। साध्वी श्रुतयशाजी और साध्वी मुदितयशाजी को भी संस्कृत का अच्छा ज्ञान है। संस्कृत और प्राकृत भाषा का ज्ञान होता है, तो आगमकार्य काफी सुगमतापूर्वक हो सकता है। साध्वी शुभ्रयशाजी आगमकार्य के साथ हमारे प्रातःकाल की गोचरी की सेवा भी करती है। गुरुदेव महाप्रज्ञजी के समय भी ये इस कार्य में निरत थी। बहुत अच्छी निष्ठा और जागरूकतापूर्वक सेवा करने वाली साध्वी है।'

d"Vk e Hkh u NkM ufrdrk

f† tykbA प्रातःकालीन कार्यक्रम के अंतर्गत परम पूज्य आचार्यवर ने अपने पावन प्रवचन में तीसरे अचौर्य महाव्रत को व्याख्यायित करने के पश्चात् कहा--'गृहस्थ जीवन में भी प्रामाणिकता की साधना अपेक्षित होती है। नैतिकता से होने वाले कार्यों के द्वारा समाज की व्यवस्था अच्छी चलती है, अन्यथा वह गड़बड़ा सकती है। व्यक्ति अर्थार्जन के लिए व्यापार करता है, किन्तु ईमानदारी से अर्जित अर्थ ही वस्तुतः अर्थ होता है। वकील का धर्म है कि वह न्याय को प्रतिष्ठित करने का प्रयास करे। न्यायाधीश का दायित्व है कि वह न्यायसंगत निर्णय करे। विद्यार्थियों को सम्यक् ज्ञान प्रदान करना अध्यापक का दायित्व होता है। चिकित्सक का कर्तव्य है कि रोगी को रोगमुक्त करने का प्रयास करना। साधु का धर्म है कि स्वयं साधना करना, जनता को धर्मोपदेश देना तथा उसकी आध्यात्मिक साधना में सहयोगी बनना। व्यक्ति हर कार्य में प्रामाणिकता रखने का प्रयास करे। थोड़ी कठिनाइयों को भले भोगना पड़े, किन्तु अनैतिकता को स्वीकार नहीं करना चाहिए।'

प्रवचन के पश्चात् पूज्यवर ने 'डालिम चरित्र' का वाचन किया। कार्यक्रम में मंत्री मुनिश्री का प्रेरक उद्बोधन हुआ। तेरापंथ कन्या मंडल जसोल द्वारा भगवान सुविधिनाथ की स्तवना की गई।

आज मध्याह्न में पूज्यप्रवर ने मुमुक्षु प्रेक्षा (आसोतरा) को जसोल में ५ नवम्बर को समायोज्य दीक्षा समारोह में समण दीक्षा प्रदान करने की घोषणा की।

e=k o egr gkrk g x# Jhe[k l fulr okD;

f‡ tykbA प्रातःकालीन कार्यक्रम में मंत्री मुनिश्री ने अपने वक्तव्य में कहा--'ज्ञान का सार है कि ज्ञान के अनुरूप जीने का प्रयास करना। हिंसा, झूठ आदि से स्वयं को बचाना। इनसे अपने आपको दूर रखता है वह ज्ञान तारक होता है। कभी-कभी अज्ञानवश ज्ञान मारक भी हो सकता है। ज्ञान वह उपयोगी है जिसके द्वारा व्यक्ति स्वयं के बंधनों से मुक्त बनता है। मूढ़ता के कारण व्यक्ति जन्म-मरण की परम्परा को वृद्धिंगत कर लेता है। हर धार्मिक व्यक्ति विवेकपूर्वक कार्य का संपादन करे और उसके जीवन में धार्मिकता का अवतरण हो।'

परमाराध्य आचार्यवर का रविवारीय प्रवचनमाला के अंतर्गत विषयबद्ध प्रवचन का क्रम आज से शुरू हुआ। आज के रविवारीय प्रवचन का विषय था-'मूल्य गुरु का'। विषय की विवेचना करते हुए पूज्य आचार्यवर ने कहा--'गुरु को पूजा का स्थान माना गया है। व्यक्ति अपने गुरु का ध्यान करे। गुरु के चरणों की पूजा करे। गुरु के मितावग्रह में आने से पूर्व गुरु की आज्ञा ले। गुरु के श्रीमुख से निसृत वाक्य मंत्र होता है। गुरु के मुख से जो निकले वह मुहूर्त है। गुरु कृपा मोक्ष का आधार है। शिष्य का धर्म है कि वह गुरु कृपा का सदैव आकांक्षी रहे। गुरु कृपा की उपेक्षा करने वाला शिष्य अपने शिष्य धर्म से किंचित् च्युत हो जाता है। गुरु अज्ञान रूपी अंधकार को मिटाने वाले होते हैं।'

लौकिक एवं लोकोत्तर गुरु की चर्चा करते हुए गुरुवर ने कहा--'विद्यालय में अध्यापन कराने वाले लौकिक गुरु होते हैं। अध्यात्म व मोक्ष की ओर ले जाने वाले गुरु लोकोत्तर-आध्यात्मिक होते है। वे स्वयं सावद्य योग के त्यागी होते हैं। वे शिष्य को सन्मार्ग दिखाते हैं और उसे निरवद्य पथ पर अग्रसर करते हैं। हमने व अनेकानेक लोगों ने गुरुदेव तुलसी व गुरुदेव महाप्रज्ञ को गुरु के रूप में स्वीकार किया। योग्य गुरु का मिलना भी सौभाग्य की बात है। शुद्ध साधु गुरु की अर्हता रखते हैं। शिष्य को गुरु से ज्ञान ग्रहण करते रहना चाहिए।' श्रीमद्भगवद्गीता में वर्णित गुरु से आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करने हेतु अपेक्षित तीन बातों की मीमांसा करते हुए पूज्यवर ने कहा--'प्रणिपात-विनय करना, जिज्ञासा एवं सेवा के माध्यम से ज्ञान प्राप्ति संभव है। तत्त्वदर्शी गुरु ज्ञान प्रदान करते हैं। तेरापंथ में आचार्य को

सर्वोच्च स्थान प्राप्त है। वे शिष्यों को आचार व संस्कार का बोध प्रदान करते हैं। गुरु के प्रति सम्मान व समर्पण का भाव रहना चाहिए।' प्रवचन के पश्चात् आचार्यप्रवर ने 'डालिम चरित्र' का वाचन किया।

कार्यक्रम में पूज्यप्रवर ने मुमुक्षु पुनीत (बालोतरा) को ५ नवम्बर को जसोल में समायोज्य दीक्षा समारोह में मुनि दीक्षा प्रदान करने की घोषणा की।

कार्यक्रम में पाटण-गुजरात स्थित हेमचन्द्राचार्य नोर्थ गुजरात युनिवर्सिटी के एम.बी.ए. विभाग के निदेशक डॉ. बी.ए. प्रजापति, सूरत से समागत श्री बालू भाई पटेल ने अपने विचार रखे। आज अहमदाबाद स्थित विश्व प्रसिद्ध शल्बी हॉस्पीटल एवं तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के संयुक्त तत्त्वावधान में निःशुल्क जोड़ प्रत्यारोपण शिविर आयोजित हुआ। शिविर में समागत डॉ. विक्रम शाह के सहयोगी, डॉ. राणावत (अमेरिका) के साथ काम कर चुके, फिजिशियन डॉ. प्रेम मरोठी के सुपुत्र डॉ. धीरज मरोठी ने विषय के संदर्भ में अपने विचार रखे।

आज मध्याह्न में जोधपुरवासियों के अनुरोध पर आचार्यप्रवर ने मुमुक्षु रीना (जोधपुर) को मुनि प्रतिक्रमण सीखने का आदेश प्रदान करते हुए जोधपुर प्रवास के दौरान उसे साध्वी दीक्षा प्रदान करने की घोषणा की।

fo'o fgUnw ifj"kn d egkea=h u fd, n'ku

f^ tykbA प्रातः विश्व हिन्दू परिषद् के अंतर्राष्ट्रीय महामंत्री श्री चंपतराय ने अपने सहयोगी पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं के साथ आचार्यवर के दर्शन किए। दर्शन करते ही उन्होंने कहा-जहां संत चतुर्मास प्रवास करते हैं, वह स्थान स्वयं तीर्थस्वरूप होता है। संत दर्शन करना सद्भाग्य का प्रतीक होता है।' उन्होंने संगठन की विभिन्न प्रवृत्तियों की विशद अवगति दी और कहा-'इकतालीस भागों में विभक्त संभागों के प्रमुख शहरों में मैं वर्ष में एक बार कोई न कोई निमित्त को लेकर चला जाता हूं।' हरिद्वार मीटिंग की जानकारी देते हुए चंपतरायजी ने बताया कि वहां हमने बढ़ रहे चारित्रिक संकट पर खुलकर चर्चा की। हमने महिला संगोष्ठी में पर्यावरण पर दो दिन गहन चिंतन किया।'

आचार्यवर ने कहा--'मानव वास्तव में मानव बने, यह कार्य हम विशेष रूप से करते है। आचार्य तुलसी ने अणुव्रत, आचार्य महाप्रज्ञ ने अहिंसा यात्रा के माध्यम से आदमी को आदमी बनाने का कार्य किया। हम अभी नशामुक्ति का कार्य अभियान के रूप में कर रहे हैं। गांव-गांव में पदयात्रा के दौरान यह कार्य अच्छा चल रहा है। ईमानदारी व नैतिक मूल्यों की भी चर्चा करते हैं।' श्री चंपतरायजी को आचार्यवर का साहित्य भेंट किया गया।

'kry dh lkèkuk d fy, vif{kr g nf"V l;e

प्रातःकालीन कार्यक्रम में स्थानीय कन्या मंडल ने चौबीसी के अंतर्गत शीतलप्रभु का स्तवन प्रस्तुत किया। बेंगलुरू से समागत संगायक श्री संदीप बरड़िया ने गीत का संगान किया। बालोतरा निवासी श्री बाबूलाल ढेलड़िया देवता ने आज ८३ दिन की तपस्या में इकाणवें दिन की तपस्या का प्रत्याख्यान पूज्यवर से किया। जनता ने ओम् अर्हम् की ध्वनि के साथ अनुमोदन किया। उपासक व ज्ञानशाला प्रशिक्षक के रूप में अपनी सेवाएं दे रहे उपासक श्रेणी के संयोजक श्री डालमचन्द नौलखा ने गीत प्रस्तुत किया। श्री चम्पालाल घोड़ावत (सादुलपुर) ने सपत्नीक आजीवन शीलव्रत स्वीकार किया।

मंत्री मुनिश्री ने अपने प्रबोधन में कहा--'पदार्थ और परमार्थ के रूप में हमारे सामने दो पथ हैं। पदार्थ हमारे व्यावहारिक जीवन के उपयोग की वस्तु है, जबकि परमार्थ हमारे जीवन का लक्ष्य है। जब व्यक्ति परमार्थ तक पहुंच जाता है तो कषाय क्षीण हो जाता है और वह वीतराग बन जाता है। पदार्थ से आसक्ति को हटाने से धर्म के क्षेत्र में गति-प्रगति संभव हो सकेगी।'

परमाराध्य आचार्यवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'सब प्रकार के तप में ब्रह्मचर्य उत्तम तप है। पांच महाव्रतों में चौथा महाव्रत है सर्वमैथुन विरमण व्रत। अनेक वृत्तियों में काम एक वृत्ति है। इस वृत्ति के उभरने से व्यक्ति अपराध में चला जाता है। रजोगुण से समुद्भूत वृत्तियां व्यक्ति को पाप की ओर उन्मुख करने वाली होती है। व्यक्ति में सामान्यतः काम की वृत्ति होती है। सर्वथा काम से मुक्त हो पाना कठिन है। शीलव्रत का स्वीकरण बड़ी साधना है। शीलव्रत स्वीकार करने वालों को भी सावधानी रखना अपेक्षित है। साधु के लिए कठोरता से इस व्रत का परिपालन अनिवार्य है। शील की सुरक्षा के लिए साधु को सदैव सजग रहना चाहिए। गृहस्थ के लिए स्वदारस्वपति संतोष व्रत की साधना है। गृहस्थ जीवन में काम मान्य होता है, पर काम पर धर्म का अंकुश रहना अपेक्षित होता है। इस साधना के लिए दृष्टि संयम की अपेक्षा है। स्वदारस्वपति संतोष व्रत की साधना श्लाघनीय है।'

आचार्यवर ने आगे कहा--'उपासक डालमचन्दजी नौलखा व निर्मलजी नौलखा दोनों भाइयों की विशिष्ट जोड़ी है। ये उपासकश्रेणी से जुड़े हुए हैं। विभिन्न क्षेत्रों में जाकर ज्ञानशाला प्रशिक्षक प्रशिक्षण शिविर में प्रशिक्षण देते हैं।'

mikld f'kfoj dk lekiu

f‰ tykbA तेरापंथी महासभा द्वारा आयोजित नौ दिवसीय उपासक शिविर का पूज्यप्रवर की पावन सन्निधि में समापन प्रातःकालीन कार्यक्रम में हुआ। सर्वप्रथम उपासक गीत प्रस्तुत किया गया। शिविर के संदर्भ में मुनि योगेशकुमारजी, साध्वी जिनप्रभाजी, उपासक श्रेणी के संयोजक श्री डालमचन्द नौलखा, शिविर प्रायोजक श्री विनोद बांठिया (चुरू-सूरत) ने अपने विचार रखे। शिविर संभागी श्री संजय पारख (कोलकाता), श्री सुमेर कोचर (गंगावती), श्री मिलन संकलेचा (टापरा), श्रीमती सरला भुतोड़िया (हैदराबाद), श्रीमती सुनीता दूगड़ (कोलकाता) ने अपने अनुभव सुनाए। श्री निर्मल नौलखा, श्री विनोद बांठिया, श्री सुरेन्द्र सेठिया ने 'उपासक श्रेणी प्रगति विवरण २०११-२०१२' पूज्यवर को भेंट किया। श्री दीपचन्द बोकड़िया ने सपत्नीक आजीवन शीलव्रत स्वीकार किया। श्रीमती मीरादेवी अग्रवाल (बालोतरा) ने दस की तपस्या का प्रत्याख्यान किया।

परमाराध्य आचार्यवर ने मंगल प्रवचन में कहा--'गृहस्थ को भी धर्म करने का अधिकार है। सिद्धांततः गृहस्थ के वेश में भी कोई मुक्तिश्री का वरण कर सकता है। गृही जीवन में भी उच्च साधना हो सकती है। गृहस्थ को अपनी क्षमता के अनुसार प्रयास अवश्य करते रहना चाहिए। श्रावक एक पदवी है। श्रावक-श्राविकाएं स्वयं साधना करते है तथा साधु-साध्वियों की साधना में भी सहयोगी बनते हैं। उनको आहार, वस्त्र, स्थान आदि की आपूर्ति श्रावक समाज द्वारा होती है। साधु वर्ग व श्रावक समाज में परस्पर एक संबंध है।'

उपासक श्रेणी की चर्चा करते हुए आचार्यवर ने कहा--'पूज्य गुरुदेव तुलसी की कृपा से उपासक श्रेणी का विकास हुआ। श्रावक-श्राविकाओं से उपासक-उपासिकाओं का स्थान थोड़ा ऊंचा होता है, क्योंकि ये प्रशिक्षित होते हैं, दूसरों के अध्यात्म की साधना में सहयोगी बनते हैं। उपासक बनने वालों की परीक्षा होती है। अर्हता के आधार पर इनका चयन होता है। क्वांटिटी नहीं, क्वालिटी पर अधिक ध्यान देना चाहिए। परम पूज्य गुरुदेव महाप्रज्ञजी की यह इच्छा थी-उपासकों की संख्या बढ़े। मुझे संतोष है कि इस श्रेणी ने विकास किया है। इसमें साधु-साध्वियों की भी प्रेरणा रहती है। सारे उपासक-उपासिकाएं एक समान नहीं होते है। उपासिकाओं की संख्या में भी वृद्धि हो रही है। इस प्रकार महिला शक्ति भी सेवा देने हेतु तत्पर हो रही है। पर्युषण पर्व के दौरान उपासक-उपासिका लोगों को धर्माराधना कराने हेतु निर्णीत क्षेत्रों में जाते है। उपासकों में तत्त्वज्ञान, वक्तृत्व और आचार का अपना महत्त्व है। इनमें कषाय मंद व व्यवहार शालीन हो। ऐसा होना उनकी आत्मा के लिए कल्याणकारी होता है तथा व्यवहार भी प्रभावी होता है। उपासक का जीवन त्याग प्रधान हो।'

शिविर में साधु-साध्वियों के सहयोग की चर्चा करते हुए आचार्यवर ने कहा--'उपासकों को संभालने का कार्य संत करते है तथा उपासिकाओं का जिम्मा साध्वियां संभालती है। साध्वी जिनप्रभाजी को तत्त्वज्ञान व आगम का अच्छा ज्ञान है। गुरुदेव तुलसी के समय से ये शिक्षा संबंधी कार्यों में संलग्न हैं। गुरुकुलवास में रहने वाली साध्वी हैं। हमारे युवाचार्यकाल में की गई यात्राओं में ये हमारे साथ रहीं। साध्वी शशिप्रभाजी एम.बी.ए की हुई है। ये प्रतिभाशाली, चिंतनशील व सेवा करने वाली है। मुनि दिनेशकुमारजी वर्षों से हमारे साथ जुड़े हुए हैं। तत्त्वज्ञान के क्षेत्र में युवा संतों में इनका अच्छा स्थान है। हमारी अन्य व्यवस्थाओं से भी संपृक्त हैं। मुनि योगेशजी युवा संत हैं। हमारी सेवा में रहते हैं। उपासक श्रेणी के विकास में इनका भी सहयोग है।' कार्यक्रम का संचालन मुनि हिमांशुकुमारजी ने किया।

सहयोगी व प्रवक्ता उपासक शिविर में संभागियों को परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर से पावन पाथेय प्राप्त हुआ। इसके अतिरिक्त जिन्होंने प्रशिक्षण दिया, उनके नाम इस प्रकार हैं   आगममनीषी मुनि महेन्द्रकुमारजी, मुनि विजयकुमारजी, मुनि उदितकुमारजी, मुनि दिनेशकुमारजी, मुनि जिनेशकुमारजी, मुनि मदनकुमारजी, मुनि कुमारश्रमणजी, मुनि जयकुमारजी, मुनि नीरजकुमारजी, मुनि योगेशकुमारजी, मुनि पुलकितकुमारजी, मुनि कीर्तिकुमारजी, मुनि परमानन्दजी, मुनि जितेन्द्रकुमारजी, मुनि अनन्तकुमारजी, मुनि अभिजितकुमारजी, साध्वी जिनप्रभाजी, साध्वी शशिप्रभाजी, साध्वी चन्द्रिकाश्रीजी, साध्वी प्रबुद्धयशाजी, उपासक डालमचन्द नौखला, उपासक बजरंग जैन, उपासक सुरेन्द्र सेठिया।

उपासक शिविर में सितत्तर भाई-बहिनों ने भाग लिया। उपासक सहयोगी परीक्षा में सड़सठ भाई-बहनों ने भाग लिया, जिनमें से पचपन चयनित हुए। उपासक प्रवक्ता परीक्षा में उन्नीस उपासक-उपासिकाओं ने भाग लिया, जिनमें से आठ चयनित हुए। उपासक प्रवक्ता शिविर में तिरेपन भाई-बहिनों ने भाग लिया।

Lefr&I cy

- सरदारशहर निवासी हैदराबाद प्रवासी श्री भींवराज बरड़िया का हैदराबाद में देहान्त हो गया। ग्यारह वर्षों से असाध्य बीमारी से ग्रस्त होते हुए भी उनका समभाव उल्लेखनीय था। पांच सामायिक के साथ जप-स्वाध्याय उनका नित्यक्रम था। आचार्य महाप्रज्ञ की सहदीक्षित साध्वी लिछमाजी बरड़ियाजी की संसारपक्षीय बड़ी मां थीं। उनके तीन पुत्रों में मझले करणीसिंहजी हैदराबाद के वरिष्ठ व जिम्मेवार कार्यकर्ता हैं। कनिष्ठ पुत्र प्रकाश भी सेवाभावी है। ज्येष्ठ पुत्र चेन्नई प्रवासी है।
- गंगाशहर निवासी श्रीमती सुमेरीदेवी आंचलिया (धर्मपत्नी-श्री चंपालालजी आंचलिया) का नब्बे वर्ष की उम्र में कोटा में स्वर्गवास हो गया। वे सुप्रसिद्ध श्रावक स्व.हीरालालजी आंचलिया की पुत्रवधू और गुरुदेव तुलसी के भक्तिमान श्रावक स्व.सुगनचन्दजी आंचलिया के भाई की पत्नी थीं। सुमेरीदेवी तप व त्याग की मूर्ति थीं। पिछले पचास वर्षों से चातुर्मास काल में गुरु उपासना का लाभ लेती थीं। अगाध आस्था के बल पर इकतीस वर्ष की युवावस्था में पति वियोग होने पर वे सामायिक में बैठ गई और लोगों को विलाप करने से मना कर माला फेरने के लिए प्रेरित किया। गुरुदेव तुलसी ने भरी परिषद में इस प्रसंग को उल्लेखनीय बताया। स्व.मनोहरीदेवी आंचलिया के साथ सुमेरीदेवी 'नया मोड़' अभियान के अंतर्गत पर्दा प्रथा के उन्मूलन में अग्रणी रहीं। 'नारीरत्न' से सम्मानित सुश्राविका सुमेरीदेवी का पूरा परिवार धर्मसंघ के प्रति आस्थाशील और समर्पित है।
- लाडनूं निवासी कटक प्रवासी श्री राजेश खटेड़ (सुपुत्र श्री गुलाबचन्द खटेड़) तथा उनकी धर्मपत्नी श्रीमती उषा खटेड़ का सड़क दुर्घटना में दुःखद देहावसान हो गया। नरपतगंज (बिहार) में जन्मे, कटक में व्यवसायरत उनपचास वर्षीय राजेश संघ-संघपति के प्रति समर्पित, हंसमुख, मिलनसार एवं साधु-साध्वियों की सेवा में सदैव तत्पर रहते थे। सामान्यतः प्रतिवर्ष तीन-चार बार गुरु दर्शन

करते थे। तेयुप कटक के चार बार मंत्री, एक बार अध्यक्ष व दो बार अमृत सांसद के रूप में अपनी सेवाएं दी। अभातेयुप के अध्यक्ष श्री संजय खटेड़ के वे अग्रज थे। उषा खटेड़ मृदुभाषी व कटक महिला मंडल की सक्रिय कार्यकर्त्री थी। वह प्रतिदिन सामायिक किया करती थी। उन्होंने जैनोलोजी में एम.ए. की। पूरा परिवार धार्मिक है।

- जैतोमंडी निवासी श्रीमती दयावंती जैन का बयासी वर्ष की उम्र में पचीस दिन की संलेखना व लगभग छब्बीस घंटे के तिविहार संथारे में स्वर्गवास हो गया। संघनिष्ठ व गुरुनिष्ठ श्राविका दयावंती के चौबीस घंटों में बाईस घंटे त्याग रहते। अपने परिवार के पैंसठ सदस्यों को प्रेरित कर उन्होंने गुरुधारणा करवाई। प्रतिदिन पांच सामायिक का उनका नियम था। साधु-साध्वियों की सेवा, सुपात्र दान में तत्पर व रात्रि भोजन का परिहार रखने वाली वह बारहव्रती श्राविका थी।
- बालोतरा निवासी श्रीमती चुकीदेवी तलेसरा (धर्मपत्नी-स्व.मीठालालजी तलेसरा) का देहावसान हो गया। उन्होंने लगातार दो सौ पचास बेले और तेरह तेले तथा बीस अठाई और ग्यारह वर्षीतप किए। बारहवां चल रहा था। छत्तीस वर्षों से रात्रि चौविहार तथा जमीकन्द का उन्हें त्याग था। रास्ते की सेवा बड़ी भावना से करती थीं। परिवार ने किसी रूढ़ि को प्रश्रय न देते हुए पांच दिन में शोक संपन्न कर गुरुदर्शन कर लिए।

i{kkè;ku f'kfoj dh lek;ktuk

परम पावन आचार्यप्रवर की मंगल सन्निधि में प्रेक्षा फाउण्डेशन, जैन विश्व भारती द्वारा जसोल में २६ सितम्बर से ३ अक्टूबर तक प्रेक्षाध्यान शिविर की समायोजना की जा रही है। परमाराध्य आचार्यप्रवर ने अनुग्रह कर इस शिविर में प्रतिदिन स्वयं ध्यान करवाने की स्वीकृति प्रदान की है। इस शिविर के अतिरिक्त चतुर्मास में प्रेक्षा फाउण्डेशन द्वारा प्रेक्षाध्यान से सम्बद्ध अन्य समायोज्य कार्यक्रम इस प्रकार हैं

- ४, ५ अगस्त — प्रेक्षाध्यान कार्यशाला
- ३ से ७ सितम्बर — प्रेक्षाध्यान पूर्वजन्म अनुभूति शिविर
- ८, ९ सितम्बर — प्रेक्षाध्यान कार्यशाला
- २९, ३० सितम्बर — प्रेक्षा प्रशिक्षक अधिवेशन
- २९, ३० सितम्बर — प्रेक्षावाहिनी अधिवेशन
- ६, ७ अक्टूबर — प्रेक्षाध्यान कार्यशाला
- १९ से २६ नवम्बर — ११वां अन्तर्राष्ट्रीय प्रेक्षाध्यान शिविर

इस संदर्भ में विस्तृत जानकारी तथा शिविर, कार्यशाला और अधिवेशन में संभागी बनने हेतु मो. नं. ०८२३३३४४८२ फोन नं. ०१५८१-२२२११९ पर सम्पर्क किया जा सकता है।

ftKklk vkidh % lekèkku iT;ioj dk

परम पूज्य आचार्यप्रवर ने विज्ञप्ति के पाठकों पर महान् अनुग्रह करते हुए उनकी जिज्ञासाओं को स्वयं समाहित करने की स्वीकृति प्रदान की है। पाठक अपनी विविध विषयक जिज्ञासाएं campoffice13@gmail.com पर प्रेषित कर सकते हैं। चयनित जिज्ञासाएं ही आचार्यवर द्वारा प्रदत्त समाधान के साथ यथासमय विज्ञप्ति में प्रकाशित की जा सकेंगी। इस संदर्भ में अग्रांकित बिन्दु ध्यातव्य हैं

- जिज्ञासा संक्षिप्त, सारपूर्ण और स्पष्टतया लिखित हो।
- पत्र पर 'जिज्ञासा' शीर्षक अवश्य लिखें।

Postal Reg. No. DL (C)-01/1243/12-14 Fri.-Sat.
L.No.-U (C) 200/2012-2014
Licence to Post without Pre-payment
Regd. No. 61758/95 Office of Posting N.D.P.S.O.

- एक व्यक्ति तीन जिज्ञासाओं से अधिक जिज्ञासाएं प्रेषित न करे।
- जिज्ञासा अपने नाम और संपर्क सूत्र के साथ ही प्रेषित करें। अन्य कोई बात पत्र में न लिखें।
- जिज्ञासा प्रेषित करने के पश्चात् उत्तर प्राप्ति हेतु फोन, पत्र व्यवहार आदि न करें।

vkn'k lkfgR; la?k dk HkV

३१००/- श्री मदनलाल-सज्जनदेवी मरलेचा (कंटालिया-चेन्नई) के दाम्पत्य जीवन की ५०वीं वर्षगांठ (स्वर्ण जयंती) के उपलक्ष्य में उनके सुपुत्र व पुत्रवधू नीरज-ममता एवं सुपौत्र मंयक, सुपौत्री सिद्धी मरलेचा द्वारा प्रदत्त।

३१००/- स्व. श्री कनकमलजी सेठिया (बलुंदा-ब्यावर-चेन्नई) की पुण्य स्मृति में उनके सुपुत्र श्री विमलचन्द, कमलचन्द, निर्मलचन्द, अनिलकुमार सेठिया द्वारा प्रदत्त।

३१००/- स्व. श्रीमती फूसीदेवी पारख (धर्मपत्नी स्व. आसकरणजी पारख, श्रीडूंगरगढ़) की पुण्य स्मृति में उनके सुपुत्र व पुत्रवधू छतरसिंह-टमकूदेवी, उम्मेदसिंह-शान्तिदेवी, सुपौत्र हेमन्त, प्रदीप, ललित, मनजीत पारख द्वारा प्रदत्त।

२१००/- स्व. डॉ. मानकचन्दजी प्रेमराजजी नाहर, परतूर (महाराष्ट्र) की पुण्य स्मृति में उनकी सुपुत्री श्रीमती निर्मलादेवी-कान्तिलालजी सेठिया (औरंगाबाद), श्रीमती उर्मिलादेवी-माणकचन्दजी पीपाड़ा (जालना), श्रीमती किरणदेवी-देवीचन्दजी समदड़िया बीड़ (महाराष्ट्र) द्वारा प्रदत्त।

२१००/- सुश्री प्रिया चोरड़िया के कक्षा १२वीं (C.B.S.E.) में सम्पूर्ण असम में सेकेण्ड स्थान प्राप्त करने के उपलक्ष्य में दादाजी-दादीजी झूमरमल-धन्नीदेवी, पिताजी-माताजी सुरेन्द्र-सुमन, भाई-बहिन सौरभ, सुप्रिया चोरड़िया, गंगाशहर-गुवाहाटी द्वारा प्रदत्त।

२१००/- स्व. श्री टीकमचन्दजी बैद (सुपुत्र स्व. मालचन्दजी बैद, छापर-जयपुर) की पुण्य स्मृति में उनके सुपुत्र व पुत्रवधू संपतमल-रमणीदेवी, पारसमल-सज्जनदेवी, राजेन्द्र-सुनीता, चैनरूप-अलका, सुपौत्र कीर्ति, सौरभ, अमृत, यश, सिद्धार्थ, गौरव बैद द्वारा प्रदत्त।

lEckèku vydj.k

fŠ tykbA परमाराध्य आचार्यप्रवर ने प्रातःकालीन कार्यक्रम के दौरान श्राविका श्रीमती कंचनदेवी धर्मपत्नी स्व. कुन्दनमलजी सुराणा (तारानगर-कोलकाता) को 'श्रद्धा की प्रतिमूर्ति' सम्बोधन से सम्बोधित किया है।

i=k 0;ogkj d fy, gekjk irk&&

d'koi lkn pronh] icUèkd&vkn'k lkfgR; l?k] }kjk&vkpk; egkJe.k iokl 0;oLFkk lfefr]
ik- tlky&…††,„† ft- ckMej ¼jktLFkku½ Qku % ‹^Š,,‡‡…Šƒ] ‹…‡„†,†^†ƒ

दिल्ली कार्यालय का फोन ०११-२३२३४६४१ Email : adarshsahityasangh@yahoo.com

idk'ku fnukd % „ƒ&‰&„,ƒ„

•

आदर्श साहित्य संघ, २१०, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-११०००२ के लिए बच्छराज कठौतिया ट्रस्टी द्वारा प्रकाशित तथा पवन प्रिंटर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली-११००३२ से मुद्रित। सम्पादक : **d'koi lkn pronhA**